International Journal of Applied Research 2017; 3(8): 589-594

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(8): 589-594
www.allresearchjournal.com
Received: 23-06-2017
Accepted: 24-07-2017

कृष्णा शर्मा
प्रोफेसर शुभा व्यास
पर्यवेक्षक, जयपुर नेशनल युनिवर्सिटी, जगतपुरा, जयपुरं, राजस्थान, भारत

Correspondence
कृष्णा शर्मा
प्रोफेसर शुभा व्यास
पर्यवेक्षक, जयपुर नेशनल युनिवर्सिटी, जगतपुरा, जयपुरं, राजस्थान, भारत

संगठनात्मक वातावरण का अध्यापकों के भूमिका दबाव के सन्दर्भ में अध्ययन

कृष्णा शर्मा

सारांश
संसार में प्रत्येक व्यक्ति की भूमिका निर्धारित होती है। जन्म से लेकर मृत्यु तक हम उस भूमिका का निर्वहन करते है। उसी प्रकार विद्यालय में भी सभी अध्यापकगण अपनी–अपनी भूमिका का निर्वहन करते है। जब अध्यापक अपनी भूमिका का निर्वहन करने में असमर्थ होने लगते है तब उन्हें दबाव महसूस होने लगता है। भूमिका दबाव भूमिका की प्रभावशीलता के लिए हानिकारक है क्योंकि इससे उदासीनता बढ़ती है, शिक्षण कार्य में रूचि कम होने लगती है, कार्यकुशलता का ह्रास होने लगता है और सहयोग का वातावरण गड़बड़ा जाता है आदि। अध्यापकों के भूमिका दबाव के प्रमुख कारकों (असहयोग पूर्ण वातावरण, कार्यसंतुष्टि, दुश्चिंता) में विद्यालय संगठन का अनुकूल या प्रतिकूल वातावरण प्रभाव डालता है। यदि विद्यालय का वातावरण स्वस्थ अर्थात् अनुकूल है तो अध्यापक कम दबाव का अनुभव करते है। इसके विपरीत यदि विद्यालय का वातावरण प्रतिकूल है तो अध्यापक अधिक दबाव का अनुभव करते है।

कूट शब्दः संगठनात्मक वातावरण, भूमिका दबाव, अनुकूल वातावरण एवं प्रतिकूल वातावरण

प्रस्तावना
प्राचीन काल में अध्यापन कार्य हेतु शिष्य से किसी भी प्रकार का शुल्क नहीं लिया जाता था, शिष्य ही अपने सामर्थ्यानुसार कुछ न कुछ गुरू को भेंट स्वरूप दे देता था जिसे गुरू सप्रेम भेंट स्वरूप स्वीकार कर लेता था। उस समय आर्थिक सम्पन्नता गुरू का लक्ष्य नहीं था अतः उस समय किसी भी प्रकार का दबाव व तनाव का प्रश्न ही नहीं उठता था किन्तु आज युवा वर्ग अधिकतर उस व्यवसाय को ही अपनाना चाहता है जिस व्यवसाय से आर्थिक सम्पन्नता प्राप्त हो सके एवं जीवन में सभी साधन सुविधाएं प्राप्त हो सकें, अतः अध्यापन कार्य की ओर प्रतिभाएं आकर्षित नहीं हो पा रही है। अध्यापन कार्य को केवल वे ही लोग नहीं अपनाते जो वास्तव में इस (अध्यापन) कार्य में रूचि रखते हैं अपितु वे सभी लोग भी आ जाते है जिनकी इस क्षेत्र में रूचि नहीं है तथा जो इस क्षेत्र के महत्व को नहीं समझते और मजबूरी में विवशतावश इस व्यवसाय को अपना लेते हैं कुछ ही समय पश्चात् अध्यापन व्यवसाय से ऊब अनुभव करने लगते है, यदि यह कहा जाय तो गलत नहीं होगा कि वे (अध्यापक) अध्यापन के कार्य भार से एक प्रकार का दबाव व तनाव अनुभव करने लगते है। विद्यालय का वातावरण अध्यापकों के दबाव को प्रभावित करता है। यदि विद्यालय में सहयोग की कमी, प्रतिद्वंद्वता का वातावरण है तो अध्यापक दबाव का अनुभव करते है। भूमिका दबाव भूमिका की प्रभावशीलता के लिए हानिकारक है क्योंकि इससे उदासीनता और बढ़ती है, शिक्षण कार्य में रूचि कम हो जाती है, कार्यकुशलता का ह्रास होता है तथा सहयोग का वातावरण गड़बड़ा जाता है आदि। अपनी भूमिका के द्वारा ही एक व्यक्ति एक व्यवस्था से सम्बन्धित होता है। अनेक बार दबाव अध्यापक और संगठन के बीच सहयोग के वातावरण को धूमिल कर देता है।

औचित्य
राजेन्द्र सिंघवी (1999) ने संगठनात्मक भूमिका दबावः सरकारी एवं निजी विद्यालयों के अध्यापकों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन विषय पर अध्ययन किया जिसमें विद्यालय अध्यापकों में कार्यस्थल के अन्दर एवं बाहर भूमिका दबाव के कारकों यथा कार्यसंतुष्टि, दुश्चिन्ता और लोकस ऑफ कन्ट्रोल का सम्बन्ध देखा।
और पाया कि–

- पुरूष अध्यापक स्त्री अध्यापकों से अधिक भूमिका दबाव का अनुभव करते पाये गये।
- अधिकतर अध्यापकों में भूमिका दबाव आय से सम्बन्धित देखा गया जिन अध्यापकों की आय अधिक है उनमें भूमिका दबाव कम पाया गया।

- ग्रमीण पृष्ठभूमि के अध्यापकों में अधिक दबाव देखा गया।
- कार्यदुश्चिन्ता निजी विद्यालयों के अध्यापकों में सरकारी विद्यालय के अध्यापकों की अपेक्षा अधिक देखी गयी।

उपर्युक्त शोध कार्यों के पुनरावलोकन करने के पश्चात् शोधार्थी ने यह रिक्तता पाई कि संगठनात्मक वातावरण का भूमिका दबाव पर शोध कार्य नगण्य हुआ है। प्रायः यह देखा गया कि विद्यालय का संगठनात्मक वातावरण भी अध्यापकों के दबाव को प्रभावित करता है। अपने क्षेत्र में अध्यापक को सशक्त होना अति आवश्यक है। जो अध्यापक सशक्त होते है वे अपने अध्यापन कार्य में भी दक्ष होते है। यदि अध्यापक दक्ष तथा सशक्त नहीं होते है तो वे दबाव महसूस करने लगते है।

प्र.1 आज अध्यापक निरूत्साहित और उदासीन क्यों है?
प्र.2 वे किस प्रकार का दबाव अनुभव कर रहे है?
प्र.3 उच्च माध्यमिक विद्यालय का संगठनात्मक वातावरण किस प्रकार का है?

ये सभी प्रश्न शोधार्थी के मस्तिष्क में उठे और इन सभी प्रश्नों के उत्तर जानने हेतु शोधार्थी ने निम्नांकित समस्या का चयन करने का मानस बनाया।

समस्या कथन
संगठनात्मक वातावरण का अध्यापकों के भूमिका दबाव के सन्दर्भ में अध्ययन

उद्देश्य
- उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों द्वारा प्रत्यक्षीकृत अनुकूल संगठनात्मक वातावरण का उनके भूमिका दबाव का निम्न के सन्दर्भ में अध्ययन करना।
  - विद्यालय प्रकार
  - लिंग
  - शैक्षणिक अनुभव
  - संकाय
- उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों द्वारा प्रत्यक्षीकृत प्रतिकूल संगठनात्मक वातावरण का उनके भूमिका दबाव का निम्न के सन्दर्भ में अध्ययन करना।
  - विद्यालय प्रकार
  - लिंग
  - शैक्षणिक अनुभव
  - संकाय

परिकल्पना
- उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अनुकूल संगठनात्मक वातावरण प्रत्यक्षीकृत अध्यापकों के भूमिका दबाव एवं इसके आयामों के प्राप्तांकों के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
- उच्च माध्यमिक विद्यालयों के प्रतिकूल संगठनात्मक वातावरण प्रत्यक्षीकृत अध्यापकों के भूमिका दबाव एवं इसके आयामों के प्राप्तांकों के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

शोध विधि
प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने 'सर्वेक्षण विधि' का प्रयोग किया है ।

जनसंख्या एवं न्यादर्श
प्रस्तुत शोध की जनसंख्या जयपुर शहर के उच्च माध्यमिक विद्यालय के अध्यापक है जिनकी संख्या 5471 है उपर्युक्त जनसंख्या में से 357 अध्यापकों का डी. डब्ल्यू. मॉर्गन की सारणी के आधार पर न्यादर्श के रूप में चयन किया गया है ।

शोध के उपकरण
- संजोत पेठे, सुषमा चौधरी एवं उपेन्द्र धर द्वारा निर्मित ऑरगेनाइजेशनल क्लामेट स्केल का प्रयोग किया है ।
- ओरगेनाइजेशनल रोल स्ट्रैस स्केल – उदय पारीक द्वारा निर्मित का हिन्दी रूपान्तरण (अभूत मापक) अध्यापक भूमिका दबाव मापनी का प्रयोग किया है ।

सांख्यिकी
प्रस्तुत शोध कार्य में निम्न सांख्यिकी का प्रयोग किया गया है।
- टी–परीक्षण
- प्रसरण विश्लेषण

शोध का परिसीमांकन
प्रस्तुत शोध कार्य जयपुर शहर के सरकारी एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों तक परिसीमित है।

निष्कर्ष
1.1 अनुकूल संगठनात्मक वातावरण के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के अध्यापकों के भूमिका दबाव एवं इसके आयामों अन्तर्भूमिका दूरी, भूमिका रूद्वता, भूमिकापेक्षा द्वन्द्व, भूमिकाक्षरण, भूमिका अभिभार, भूमिका अलगाव, वैयक्तिक अपर्याप्तता, स्वःभूमिका दूरी, भूमिका अस्पष्टता, साधन अपर्याप्तता में से अन्तभूर्मिका दूरी व साधन अपर्याप्तता में निजी विद्यालय के अध्यापक सरकारी अध्यापकों की अपेक्षा अध्यापन कार्य से पारिवारिक जीवन में पड़ने वाले प्रभाव एवं शाला के कार्य की वजह से अपनी रूचियों में समय नही दे पाने के कारण तथा साधनों की अपर्याप्तता, कार्य सम्पादन के लिये आवश्यक सुविधाएं व आर्थिक साधन उपलब्ध न होने के कारण अधिक दबाव का अनुभव करते पाये गये। जबकि शेष आयामों में अध्यापकों के भूमिका दबाव पर विद्यालय के प्रकार का प्रभाव नहीं पाया गया।

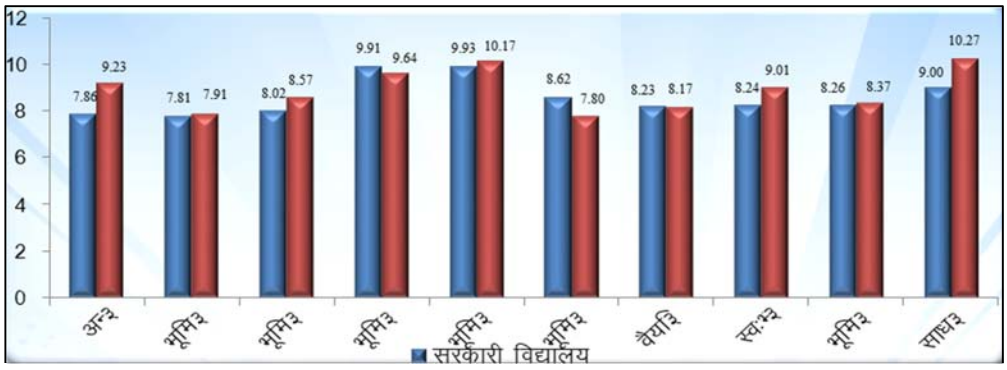

1.2 अनुकूल संगठनात्मक वातावरण के पुरूष एवं महिला अध्यापकों के भूमिका दबाव एवं इसके आयामों अन्तर्भूमिका दूरी, भूमिका रूद्वता, भूमिकापेक्षा द्वन्द्व, भूमिकाक्षरण, भूमिका अभिभार, भूमिका अलगाव, वैयक्तिक अपर्याप्तता, स्वःभूमिका दूरी, भूमिका अस्पष्टता, साधन अपर्याप्तता में लिंग का दबाव पर कोई प्रभाव नही पाया गया।

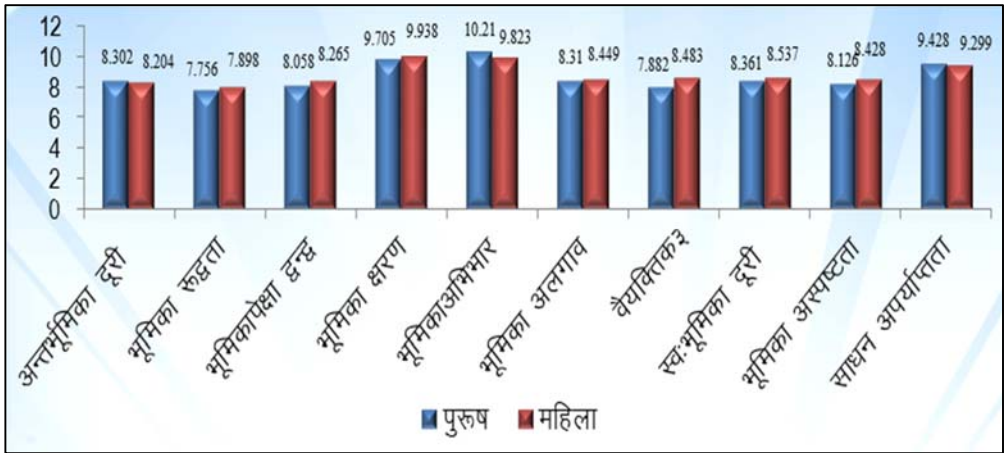

1.3 अनुकूल संगठनात्मक वातावरण के 10 वर्ष से अधिक एवं 10 वर्ष से कम अनुभव वाले अध्यापकों के भूमिका दबाव के सभी आयामों पर अध्यापन अनुभव का कोई प्रभाव नही पाया गया।

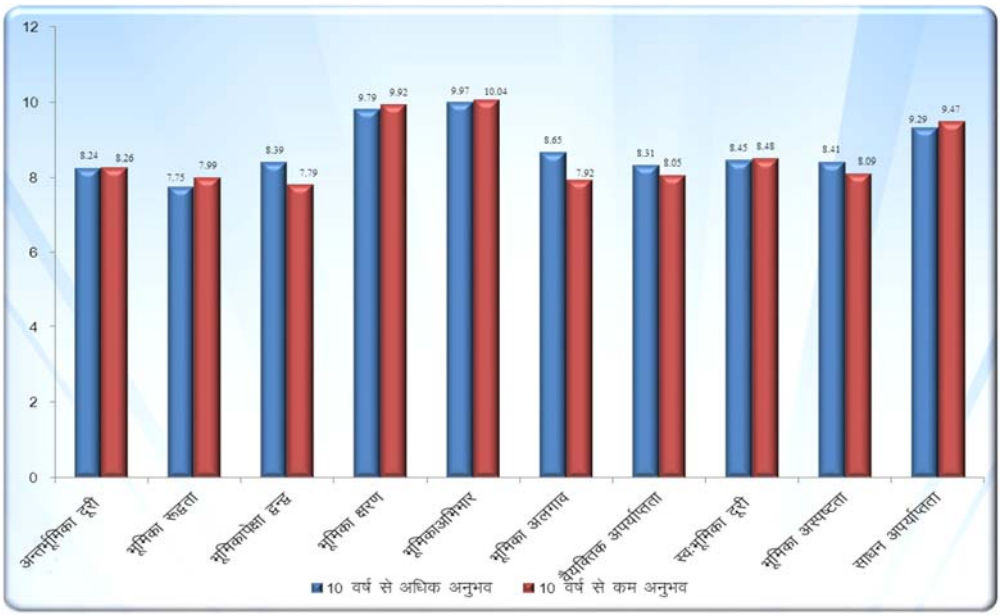

1.4 अनुकूल संगठनात्मक वातावरण बताने वाले विभिन्न संकायों के अध्यापकों की कुल भूमिका दबाव के सभी आयामों पर संकायों का दबाव के स्तर पर कोई सार्थक प्रभाव नही पाया गया।

2.1 प्रतिकूल संगठनात्मक वातावरण मानने वाले सरकारी एवं निजी विद्यालय के अध्यापकों के भूमिका दबाव एवं इसके आयामों में भूमिका अभिभार व भूमिका अलगाव आयाम में निजी विद्यालय के अध्यापक सरकारी विद्यालय अध्यापकों की अपेक्षा कार्य का भार अधिक होने के कारण, भूमिका न पहचाने जाने के कारण, कार्य के गुणवत्ता स्तर को न बनाये रख पाने के कारण, अन्य भूमिका वाहकों के साथ परामर्श का अवसर न मिल पाने के कारण तथा अत्यधिक उत्तरदायित्व के कारण अधिक दबाव का अनुभव करते पाये गये।

शेष आयामों में अध्यापकों के भूमिका दबाव पर विद्यालय के प्रकार का प्रभाव नही पाया गया।

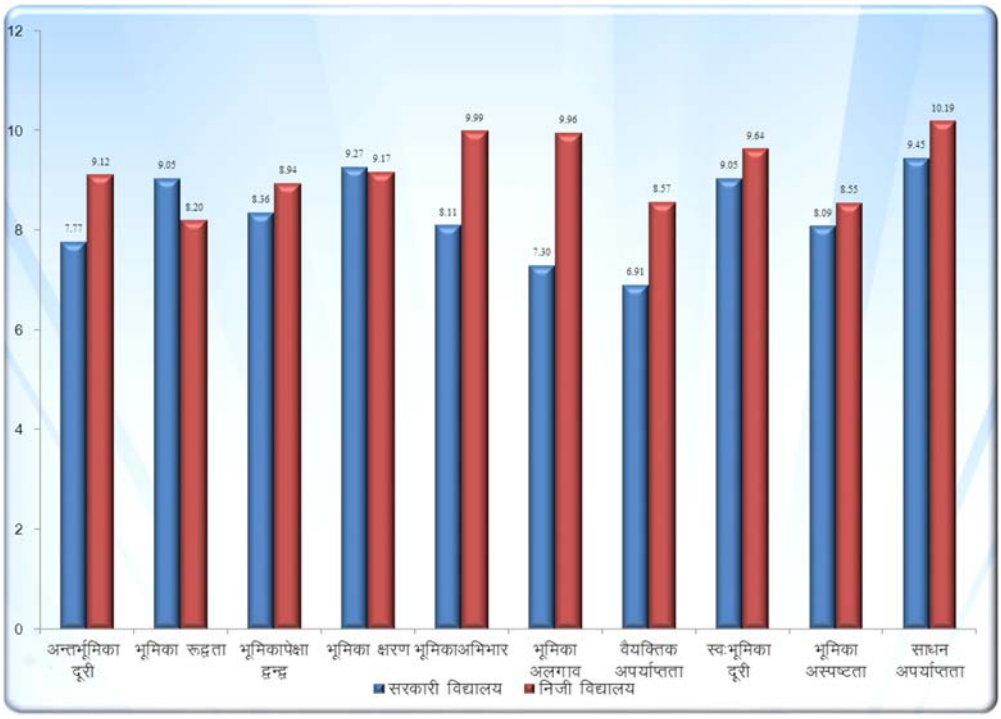

2.2 प्रतिकूल संगठनात्मक वातावरण मानने वाले महिला एवं पुरूष अध्यापकों के भूमिका दबाव एवं इसके आयामों अन्तर्भूमिका दूरी, भूमिका रूढ़ता, भूमिकापेक्षा द्वन्द्व, भूमिकाक्षरण, भूमिका अभिभार, भूमिका अलगाव, वैयक्तिक अपर्याप्तता, स्वःभूमिका दूरी, भूमिका अस्पष्टता, साधन अपर्याप्तता में से भूमिका अभिभार आयाम में महिला अध्यापक पुरूष अध्यापकों की अपेक्षा कार्य का भार अधिक होने के कारण, भूमिका न पहचाने जाने के कारण, कार्य के गुणवत्ता स्तर को न बनाये रख पाने के कारण अधिक दबाव का अनुभव करती पायी गयी ।

शेष आयामों में पुरूष एवं महिला अध्यापक भूमिका दबाव एवं इसके आयामों में भिन्नता नहीं रखते है अर्थात दबाव पर लिंग का कोई प्रभाव नहीं पाया गया।

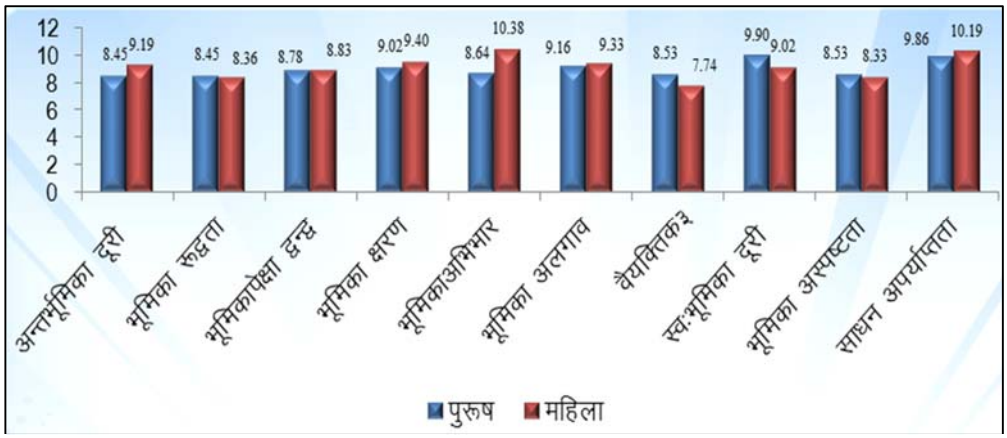

2.3 प्रतिकूल संगठनात्मक वातावरण मानने वाले 10 वर्ष से अधिक एवं 10 वर्ष से कम अनुभव वाले अध्यापकों के भूमिका दबाव एवं इसके आयामों अन्तर्भूमिका दूरी, भूमिका रूढ़ता, भूमिकापेक्षा द्वन्द्व, भूमिकाक्षरण, भूमिका अभिभार, भूमिका अलगाव, वैयक्तिक अपर्याप्तता, स्वःभूमिका दूरी, भूमिका अस्पष्टता, साधन अपर्याप्तता में से भूमिका अलगाव आयाम में 10 वर्ष से अधिक अनुभव वाले अध्यापक 10 से कम अनुभव वाले अध्यापकों की अपेक्षा दुसरे कार्यों में लगे लोग इनकी भूमिका को महत्व नही देने के कारण, इनकी भूमिका व अन्य भूमिका के मध्य कोई अन्तःप्रक्रिया नही होने के कारण व दुसरे लोगों से सहयोग नही मिल पाने के कारण अधिक दबाव का अनुभव करते पाये गये।

शेष आयामों में अनुभव का अध्यापकों के भूमिका दबाव एवं इसके आयामों पर कोई प्रभाव नहीं पाया गया।

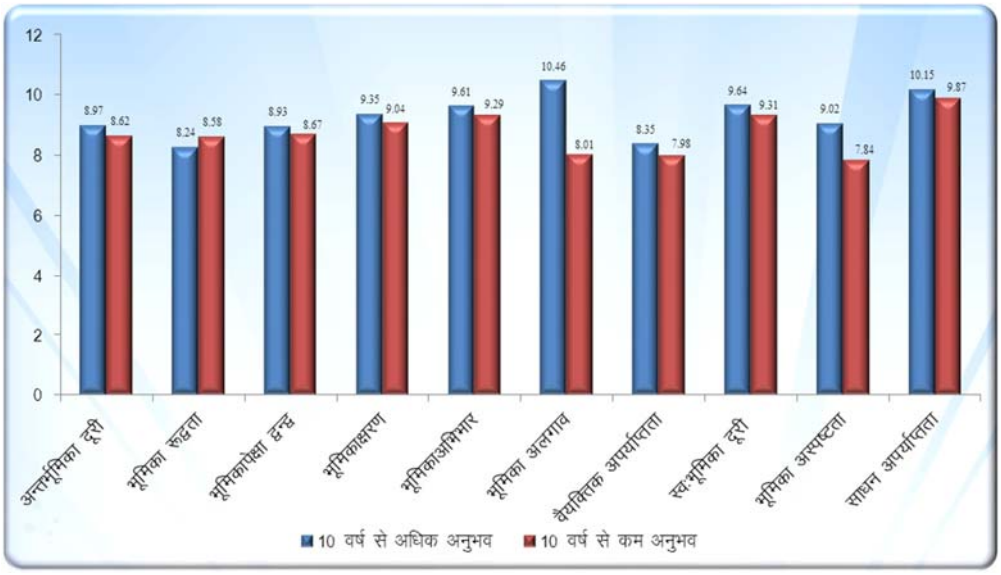

2.4 प्रतिकूल संगठनात्मक वातावरण बताने वाले विभिन्न संकायों के अध्यापकों की भूमिका दबाव के सभी आयामों में संकाय का दबाव के स्तर पर कोई प्रभाव नही पाया गया ।

शैक्षिक निहितार्थ

- प्रस्तुत शोध निष्कर्षों से विद्यालय के प्रबंधकों को यह दिशा मिलेगी कि विद्यालय का वातावरण अध्यापकों के लिये अनुकूल बनाया जाये जिसके परिणामस्वरूप अध्यापक कम दबाव महसूस करेंगे।
- शोधार्थी ने अपने शोध के परिणामों के आधार पर यह अनुभव किया कि उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों में भूमिका दबाव को कम करने तथा संगठन को स्वस्थ बनाने के लिए शिक्षण संस्थाओं में एक कार्य योजना विकसित की जानी चाहिए। क्योंकि भूमिका दबाव विघालय संगठन को प्रभावित कर सकता है। यह एक प्रकार से मानव योग्यता की क्षति होगी। इसलिए इस क्षति को रोकने के लिए भूमिका दबाव के कारकों को सकारात्मक शक्ति के रूप में बदला जाना चाहिए। इसके लिए एक प्रभावी व्यूह रचना बनाई जा सकती है–

1. अध्यापकों में भूमिका दबाव की भावना को रोकने के लिए उनमें 'स्वानुग्रहाभिमुखता' की भावना का विकास किया जाय, क्योंकि यह बात सच है कि दुसरों पर अनुग्रह करने की भावना से किया गया कार्य व्यक्ति को भार स्वरूप लगता है तथा दबाव उत्पन्न होता है, इसके विपरीत स्वयं को अनुग्रहित करने की भावना से किये गये कार्य के प्रति व्यक्ति की प्रतिबद्वता रहती है और व्यक्ति उत्साहित रहता है। अतः उसमें किसी भी प्रकार का दबाव नहीं रहता।
2. अध्यापक को अपनी जीवन शैली में भी परिवर्तन लाना चाहिए। अर्थात् जब जीवन का एक ही ढ़ंग बन जाता है, जीवन में एक रसता आ जाती है तो ऊब उत्पन्न होती है जो तनाव का कारण होती है अतः जीवन की एकरसता में परिवर्तन लाकर अत्यधिक दबाव से बचा जा सकता है। अपनी जीवन शैली में शिथिलीकरण, शारीरिक श्रम, व्यायाम, पोष्टिक आहार, विभिन्न प्रकार के शौक, अपने कार्य के उच्च स्तरीय लक्ष्य तथा वचनबद्धता इसमें सहायक होते है। अर्थात् अध्यापकों में दबाव का सामना करने, उन्नत मनोवैज्ञानिक परिस्थितियों व पूर्ण विश्रान्ति के लिए उपरोक्त सहज तरीके अपनाये जाने चाहिये।
3. 'प्रशिक्षण और सहभागिता' : यदि अध्यापकों में सहभागिता के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण होगा तो अत्यधिक भूमिका दबाव को रोका जा सकता है। अर्थात् व्यक्ति अपनी वास्तविक स्थिति को पूर्णरूप से बिना भय व दूसरों के प्रति आक्रामक भाव रखे समझे, साथ ही दूसरों के दृष्टिकोण के प्रति सम्मान का भाव रखना भी प्रभावशाली हो सकता है। अध्यापकों में आत्म विश्लेषण करने की आदत भी विकसित की जानी चाहिए इसके लिए अध्यापकों के लिए इस प्रकार का प्रशिक्षण विकसित किया जाय जिसमें अध्यापक दबाव को कम करने में सहभागिता का उपयोग कर सकें। इसका तात्पर्य है कि अपनी समस्याओं के लिए दूसरों से सहायता ले सके तथा उनकी आवश्यकता पर उन्हें (दूसरों को) सहायता दे सकें।
4. कार्य के बाहर के जीवन में हस्तक्षेप : संगठन कोई भी हो उसे सामुदायिक जीवन पर अधिक ध्यान देना चाहिये क्योंकि यह देखा गया है कि दबाव के कारण व्यक्ति के व्यक्तिगत जीवन में समस्याओं से भी सम्बंधित रहते है जैसे रहने के स्थान का अभाव, सरकारी नौकरी स्थानान्तरण की समस्या, बच्चों के स्कूल में दाखिलें की समस्या आदि। अतः संगठन को अपने कर्मचारियों की समस्याओं के निवारण के लिये सहायता देनी चाहिये।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल, डॉ. संध्या (2005)- शिक्षा मनोविज्ञान, वाराणसीः संस्करण विजय प्रकाशन मन्दिर
2. भटनागर, सुरेश (2005)- अधिगम एवं विकास के मनोसामाजिक आधार, मेरठः संस्करण इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस
3. शर्मा, आर, ए. (2005)- शिक्षा अनुसंधान, मेरठः संस्करण सूर्या पब्लिकेशन
4. बरौलिया, डॉ. अंशु, अग्रवाल, डॉ. ए. (2007)- शैक्षिक अनुसंधान की विधियां एवं शैक्षिक सांख्यिकी, आगराः संस्करण राधा प्रकाशन मन्दिर,
5. बेस्ट, जॉन डब्ल्यू. (1958)- रिसर्च इन एजूकेशन, यू.एस. ए.: पेक्टिस हॉल, इंक ऐंगिल बुक क्लिफ्स
6. फ्रेडरिक, एल., विहटनी (1961)- दी एलीमेन्ट्स ऑफ रिसर्च, न्यूयार्कः एशिया पब्लिशिंग हाउस
7. लुण्डबर्ग (1962)- सोशल साइकोलोजी, न्यूयार्कः मैकग्रहिल बुक कम्पनी
8. सक्सैना, एन., मिश्रा, आर. (1997)- अध्यापक शिक्षा, मेरठः आर. लाल. बुक डिपो

9. पुरोहित, जगदीश नारायण, शर्मा, मुरली मनोहर (2002)- भावी शिक्षकों के लिये आधारभूत कार्यक्रम, जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पंचम संस्करण
10. गुडे एवं हॉट (1962)- मैथड्स इन सोशल रिसर्च, न्यूयाकः मेग्रहिल बुक कम्पनी
11. मेकगुइन, एफ.जे. (1969). एक्सरेरीमेंट्स साइकोलोजी, न्यूयार्कः प्रेक्टिस हॉल ऑफ प्रा.लि.
12. रेमर्स, रूमेल एवं गेज (1964)- एन इन्ट्रोड़क्शन टू मेजरमेन्ट एण्ड एव्ल्यूशन, न्यूयार्कः
13. रमल जे.एम.एन. (1999)- इन्ट्रोड़क्शन टू रिसर्च पोजीशन इन एजूकेशन, न्यूयार्क हार्पर ब्रदर्स
14. बोर्ग एवं डेलनपेन (1968)- अण्डर स्टॅडिंग एजकेशन रिसर्च, न्यूयार्कः मेग्रहिल बुक कम्पनी
15. क्रेच एवं क्रचफील्ड (1978)- थ्यौरी एण्ड प्राब्लम ऑफ सोशल साइकोलोजी, यूयार्कः मैग्रहिल पब्लिकेशन